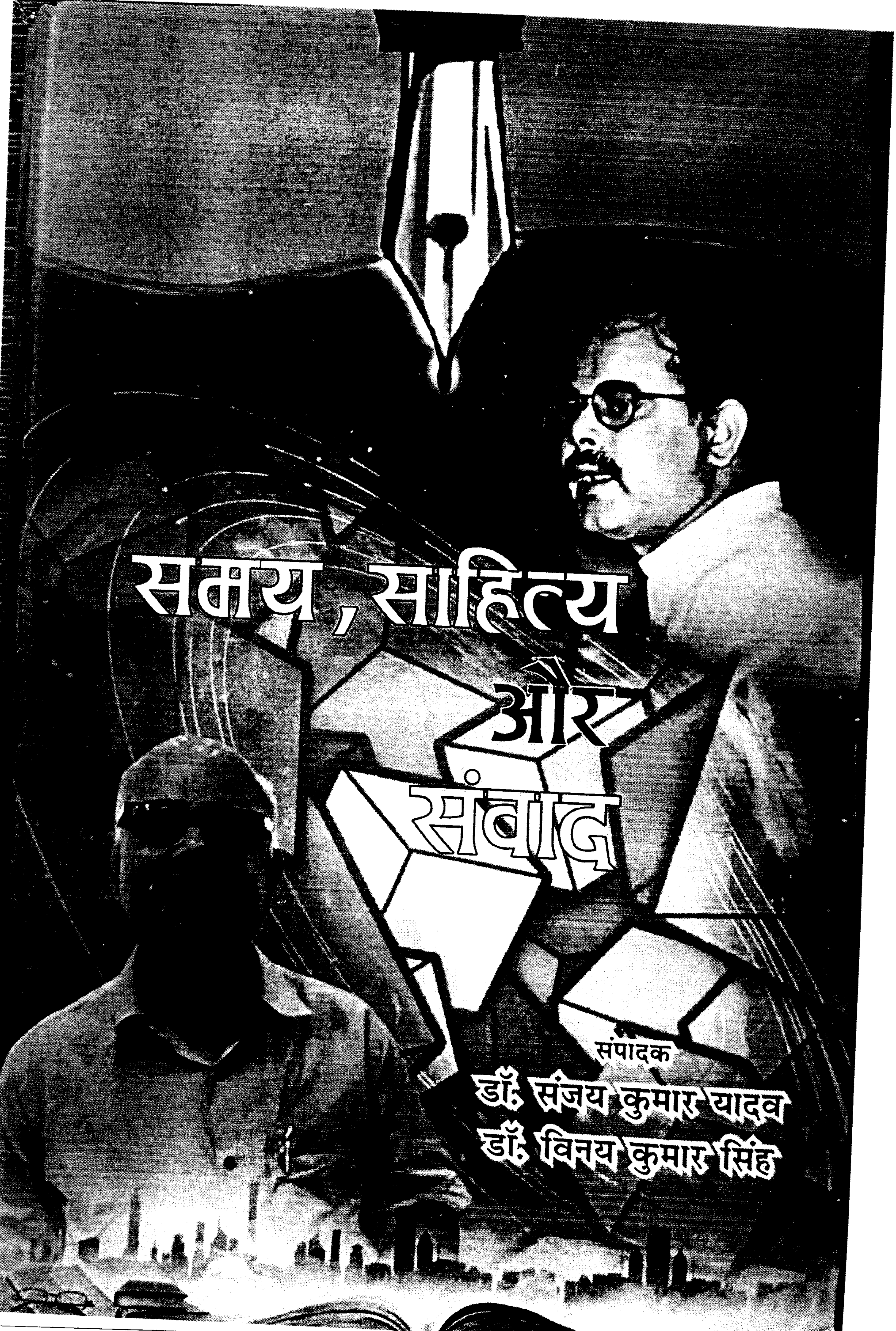
समय , साहित्य
और
संवाद
संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

समय, साहित्य और संवाद

संपादक
डॉ. संजय कुमार यादव
डॉ. विनय कुमार सिंह

अभिधा प्रकाशन

परामर्शक-मंडल
प्रो. कल्याण कुमार झा, डॉ. राकेश रंजन, डॉ. सुनील कुमार

संपादक-मंडल
डॉ. हेमा कुमारी, डॉ. भोला प्रसाद यादव, डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन', अतुल आजाद

ISBN : 978-93-92342-46-2

प्रथम संस्करण
2022

सर्वाधिकार
लेखकाधीन

प्रकाशक
अभिधा प्रकाशन
रामदयालु नगर, मुजफ्फरपुर-842002
दिल्ली कार्यालय
जी72, गंगा विहार, गोकुलपुरी, दिल्ली-110094

अक्षर-संयोजन
एस. कुमार

आवरण
हिमांशु राज

मुद्रक
बी० के० ऑफसेट, दिल्ली-32

मूल्य
1100/- (ग्यारह सौ रुपये)

Samay, Sahitya aur Samwad
Edited By **Dr. Sanjay Kumar Yadav & Dr. Vinay Kumar Singh**
Rs. 1100.00

अनुक्रम

संपादकीय

शब्द-सारथी की अक्षर-यात्रा/ डॉ. संजय कुमार यादव एवं डॉ. विनय कुमार सिंह/9

संस्मरण

1. श्रम, पुरुषार्थ और प्रतिभा का प्रतिमान : सतीश कुमार राय/ डॉ. परमेश्वर भक्त/13
2. 'पर-उपकार वचन मन काया' के विग्रह : डॉ. सतीश कुमार राय/ डॉ. जंगबहादुर पांडेय 'तारेश'/17
3. डॉ. सतीश कुमार राय का लेखकीय व संपादकीय व्यक्तित्व/ साकेत बिहारी शर्मा 'मंत्र मुदित'/28
4. साहित्य-सागर का अनमोल मोती/डॉ. गोरख प्रसाद मस्ताना/34
5. प्रतिमानों के प्रतिमान डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/चतुर्भुज मिश्र/38
6. संवाद का सहज संवेदन और संवेदन का सार्थक सृजन/डॉ. संजय पंकज/42
7. चंपारन का गौरव बढ़ानेवाले विद्वान डॉ. सतीश कुमार राय/ अंजनी कुमार सिन्हा/48
8. वो देखो! रौशन हुआ जाता है रस्ता.../डॉ. रामेश्वर द्विवेदी/51
9. अनजान को जितना मैंने जाना है/प्रो. (डॉ.) सुरेंद्र प्रसाद केसरी/61
10. चंपारन के रत्न : डॉ. सतीश कुमार राय/प्रो. (डॉ.) पुष्पा गुप्ता/64
11. डॉ. सतीश कुमार राय : एक सहज व्यक्तित्व/प्रो. (डॉ.) संत साह/69
12. प्रो. सतीश कुमार राय : सहज व्यक्तित्व के पुरुषार्थी/प्रो. राजीव कुमार झा/72
13. मेरी राय में प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. श्रीकांत सिंह/75
14. एक चुंबकीय व्यक्तित्व/डॉ. मधुसूदन मणि त्रिपाठी/78
15. डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान' से नामचीन तक/डॉ. मृगेंद्र कुमार/81
16. अनजान से अभिज्ञान तक/डॉ. तारकेश्वर उपाध्याय/88
17. मेरे लिए सतीश के होने का मतलब/डॉ. अनिल कुमार राय/92
18. उपलब्धियों के शिखर-पुरुष डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. शैल कुमारी वर्मा/95
19. शीतल झरने के मीठे पानी जैसा व्यक्तित्व : प्रो. सतीश कुमार राय जी!/ डॉ. शकील मोईन/98
20. गुफ्तगू में ही झलकती विद्वत्ता/जफर इमाम/100
21. भाई सतीश : एक दृष्टि/लालबाबू शर्मा/103

22. विरल व्यक्तित्व के धनी डॉ. सतीश कुमार राय 'अनजान'/
डॉ. रामनरेश पंडित रमण/105
23. नमामि वीथिनायकम्!/डॉ. उपेंद्र प्रसाद/108
24. सतीश : मेरा मित्र/मनोज मोहन/113
25. हर दिल अजीज : प्रोफेसर सतीश कुमार राय/डॉ. राजीव कुमार/116
26. सहज और निश्छल साथी : सतीश कुमार राय/अशोक गुप्त/120
27. सहज, सरल और आत्मीय बंधु प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/
अरविंद कुमार/124
28. जीवेत शरद: शतम्/डॉ. मधु रचना/131
29. कर्मठता और मेधा के प्रतिमान भाई 'अनजान'/डॉ. नागेंद्र सिंह/134
30. भैया, साइकिल चलाना सीख लीजिए न/डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी/137
31. प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय 'अनजान' से जुड़े संस्मरण/सुरेश गुप्त/149
32. संघर्ष की प्रतिमूर्ति/अरुण गोपाल/163
33. डॉ. सतीश कुमार राय : एक साहित्यिक गौरव-पुरुष/डॉ. दिवाकर राय/165
34. प्रखर व्यक्तित्व, समर्पित शख्सियत डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. सीमा स्वधा/181
35. प्रोफेसर राय को जैसा मैंने जाना/डॉ. अनिता सिंह/185
36. डॉ. सतीश कुमार राय : मेरी नजरों में/डॉ. विजयिनी/187
37. अभिनव अनजान/डॉ. जगमोहन कुमार/189
38. मेरे प्रेरक, मेरे सर्जक : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. हेमा कुमारी/193
39. अनमोल स्मृतियाँ/डॉ. चंद्रलता कुमारी/201
40. गुरुवर : एक परिचय/डॉ. राकेश कुमार/205
41. सहज व्यक्तित्व और प्रखर कर्तृत्व के प्रतिमान/डॉ. कुमार अनुभव/208
42. मेरे गुरुदेव डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. राकेश रंजन/212
43. सर के सान्निध्य में : एक संस्मरण/डॉ. हर्षलता सिंह/217
44. हिंदी के बहुआयामी साधक सतीश राय 'अनजान'/डॉ. संदीप कुमार सिंह/220
45. शोध की अभिलाषा से गुरुदेव मिले/डॉ. संजय कुमार सिंह/222
46. गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय के चरणों में समर्पित संस्मरण के दो शब्द/
डॉ. विजय कुमार पांडेय/225
47. अतीत के पन्नों में मेरे गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. रश्मि कुमारी/228
48. मेरे जीवन-पथ का पाथेय/डॉ. प्रकाश कुमार/232
49. समन्वय और सामंजस्य के अद्भुत कलाकार डॉ. सतीश कुमार राय/
डॉ. प्रीति मणि/237
50. हिंदी के विशाल छायादार वृक्ष प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. यशवंत कुमार/241

51. मेरे गुरु प्रो. सतीश कुमार राय/डॉ. प्रवेश कुमार पासवान/245
52. हिंदी साहित्य के नवल स्तंभ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/ डॉ. राजेश कुमार चंदेल/247
53. आकाशधर्मा गुरु/डॉ. जितेंद्र कुमार/250
54. आकाशधर्मा गुरुवर सतीश कुमार राय/डॉ. भोला प्रसाद यादव/253
55. सहजता, सरलता और सहृदयता के छतनार वटवृक्ष : श्रद्धेय गुरुवर/ डॉ. ज्ञानेश्वर 'गुंजन'/261
56. शोध-मर्मज्ञ प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/डॉ. चंद्रभान राम/265
57. अभिनंदन-अभिनंदन/कुमारी रोशनी विश्वकर्मा/269
58. कवि सतीश कुमार राय को जितना मैं जानता हूँ/अविनाश कुमार पांडेय/272
59. सहज व्यक्तित्व : डॉ. सतीश कुमार राय/डॉ. गुंजन श्रीवास्तव/276
60. ज्ञान के सागर/डॉ. पूजा/279
61. आँखों देखा सुख/अतुल आजाद/281
62. प्रेरक व्यक्तित्व के प्रति श्रद्धा-निवेदन/रश्मि शर्मा/286
63. मेरे प्रेरक और दिशा-निर्देशक/शारदा सिन्हा/288
64. गुरु-कृपा और मैं/पिंकी कुमारी/290
65. दिशाबोध करानेवाले प्रेरक आचार्य सतीश कुमार राय/सुजाता कुमारी/292
66. आचार्यत्व को धन्य करनेवाले गुरु/गीतांजलि कुमारी/296
67. आदरणीय गुरुवर डॉ. सतीश कुमार राय/रेशमी कुमारी/299
68. मेरे अर्द्धनारीश्वर : मेरी दृष्टि में/प्रभा राय/302
69. मेरे पिता : जैसा मैंने जाना/डॉ. प्रज्ञा सुरभि/305
70. डॉ. सतीश कुमार राय : एक व्यक्तित्व के अनेक आयाम/समीक्षा सुरभि/309
71. 'अनजान' से अध्यक्ष तक/प्रो. त्रिविक्रम नारायण सिंह/318
72. सिद्ध आचार्य की षष्टिपूर्ति/प्रो. कल्याण कुमार झा/333
73. सारस्वत साधना के सिद्ध साधक : सतीश कुमार राय/डॉ. वीरेंद्रनाथ मिश्र/346
74. देखा न कोहकन कोई फ़रहाद के बग़ैर/डॉ. राकेश रंजन/350
75. ओहदेदार होने से अधिक आदमी होने की कला/डॉ. उज्ज्वल आलोक/361
76. शिक्षक, अध्यापक एवं गुरु के रूप में प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार राय/ डॉ. सुशांत कुमार/367
77. 'हिंदी विभाग एक परिवार है'/डॉ. संध्या पांडेय/372
78. 'अपनी मिट्टी का ऋण अब तक नहीं उतार पाया हूँ!'/डॉ. पुष्पेंद्र कुमार/374
79. कुशल प्रशासक डॉ. सतीश कुमार राय/मनोज कुमार/384
80. प्रेरणादायक गुरु डॉ. सतीश कुमार राय/अमित कुमार कर्ण/386

मूल्यांकन

81. 'अब नहीं मैं गीत गाने जा रहा हूँ' : डॉ सतीश कुमार राय : एक समग्र मूल्यांकन/ प्रो. (डॉ.) अरुण कुमार/389
82. सतीश कुमार राय 'अनजान' का कवित्व : एक टिप्पणी/प्रो. रवींद्र उपाध्याय/412
83. उपेक्षित जनपदीय रचनाशीलता के प्रतिबद्ध संकलक-उद्धारक व्यक्तित्व/ प्रो. रमेश ऋतंभर/415
84. चंपारन और प्रो. राय : कहियत भिन्न न भिन्न/डॉ. विनय कुमार सिंह/418
85. डॉ. सतीश कुमार राय की संपादन-दृष्टि/डॉ. सुनील कुमार/425
86. डॉ. सतीश कुमार राय की शोध एवं आलोचना-दृष्टि/डॉ. पवन कुमार/448
87. 'दर्द सहने की तो आदत बहुत पुरानी है'/डॉ. पंकज कर्ण/467
88. शोध का प्रतिमान : एकांकीकार भुवनेश्वर का यथार्थबोध/डॉ. अनिता कुमारी/471
89. कवि, शायर डॉ. सतीश कुमार राय/राहुल कुमार/475
90. प्रखर शोध-दृष्टि का प्रतिमान : पत्रकार प्रेमचंद/सपना कुमारी/479
91. डॉ. सतीश कुमार राय की आलोचना-दृष्टि/रितु प्रिया/488
92. समृद्ध साहित्यिक-सांस्कृतिक परंपराओं का आईना/दिलीप कुमार/497
93. गोपाल सिंह 'नेपाली' : एक मूल्यांकन/सोनम कुमारी/501
94. डॉ. सतीश कुमार राय की दृष्टि में 'नेपाली'/प्रशांत प्रसाद/505

साक्षात्कार

95. डॉ. सतीश कुमार राय से एक अंतरंग बातचीत/ डॉ. माधव कुमार/514
96. 'अध्यापन मेरे लिए पेशा ही नहीं, धर्म भी है।'/ डॉ. सतीश कुमार राय से डॉ. अनु की बातचीत/537

कविता

97. साहित्यकार श्री सतीश कुमार राय की साठवीं वर्षगाँठ पर/व्रतराज 'विकल'/542
98. हे ज्ञानवान!/डॉ. विनय कुमार सिंह/545
99. सतीश राय होने का मतलब/डॉ. सतीश कुमार 'साथी'/546
100. गुरुवर की अंतस्-गरिमा/अंजनी अपूर्वा/548
101. डॉ. सोनी की दो कविताएँ/549
102. वीणा द्विवेदी की दो कविताएँ/552
103. अक्षर-देह रजनीगंधा है/डॉ. संजय कुमार यादव/563

जीवन-वृत्त/577

चित्र-वीथिका/593

ओहदेदार होने से अधिक आदमी होने की कला

–डॉ. उज्ज्वल आलोक

बीपीएससी से चयनित होकर मैं बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के हिंदी विभाग में दिनांक 26 सितंबर, 2019 को योगदान करने पहुँचा। जिस कमरे में मैंने आवेदन दिया, उसमें तत्कालीन विभागाध्यक्ष प्रो. पूनम सिन्हा और डॉ. त्रिविक्रम नारायण सिंह बैठे थे। मैं दोनों व्यक्तियों के नाम से परिचित था, किंतु मेरी निगाहें उन दो शिक्षकों (प्रो. रेवतीरमण और प्रो. सतीश कुमार राय) को ढूँढ रही थीं, जिनसे मैं पूर्व-परिचित था।

मुझे गोपाल सिंह 'नेपाली' की कविताओं पर शोध करने की इच्छा थी। इसलिए विषय को समझने के लिए नेपालीजी के विशेषज्ञों से मिलने लगा। इसी क्रम में प्रो. राय से मेरी पहली मुलाकात बेतिया में हुई। वे मुजफ्फरपुर निकलने वाले थे, लेकिन आग्रह करने पर थोड़ी देर रुके। कमरे में बैठते ही पहला प्रश्न किया–"तुम्हें मेरे बारे में किसने बताया?" मैंने उत्तर में सिर्फ इतना कहा कि जो नेपाली पर काम करे या करने जाए वह आपको न जाने, मुझे ऐसा नहीं लगता। अगला प्रश्न था–"तुम्हारे विश्वविद्यालय (जेएनयू) में नेपाली पर एक एम.फिल. हुआ है, उसे देखा है?" मेरे उत्तर का इंतजार किए बिना उन्होंने अगला प्रश्न किया–"क्या केंद्रीय विश्वविद्यालय में नेपाली पर पीएचडी करने देंगे?" मेरे मुस्कुराते ही उन्होंने कहा–"मैंने नेपाली का मोनोग्राफ लिखा है। उसे पढ़ो और खुद तय करो कि तुम काम कर सकते हो या नहीं। जब लगे कि काम करना है, तब मुझसे मिलने मुजफ्फरपुर आना। जो सहयोग होगा करूँगा।" उठते-उठते उन्होंने कहा–"नेपाली पर ढेरों शोध हो सकते हैं। अभी काम ही कितना हुआ है!" शोध का विषय पास होने पर मैं मुजफ्फरपुर उनसे मिलने आया, पर विभाग में पता चला कि वे शहर के बाहर गए हैं। मैंने सोचा, अगली बार आकर मिलूँगा, पर नौकरी की व्यस्तता के कारण आ न सका। मुझे क्या पता था कि आगे मुझे स्थायी रूप से यहाँ आना है!

विभाग में योगदान देकर मैं प्रो. राय के कमरे में पहुँचा। उन्होंने बड़े प्रेम से बिठाया और मेरी अकादमिक योग्यता और शैक्षणिक कार्यों के अनुभवों के बारे में पूछा। मैंने बताते-बताते अपने दिल की बात कही कि मुझे चंपारन के किसी महाविद्यालय में नौकरी चाहिए थी, पर मेरी नियुक्ति यहाँ, विश्वविद्यालय हिंदी विभाग में, हो गई। "कइयों को विभाग नहीं मिलता। तुम्हें मिला है तो कॉलेज में जाना चाहते हो। तुम्हें यहाँ मैं लेकर आया हूँ। मैं चाहता हूँ कि अध्यापन के साथ तुम दूरस्थ शिक्षा निदेशालय में मेरा सहयोग करो, ताकि यहाँ के बहुत से बच्चों का कैरियर बचाया जा सके।" मैंने हामी में सिर हिलाया। इस संदर्भ में मेरी कुलसचिव कर्नल राय से भी फोन पर बात हुई थी। दो-तीन दिनों के बाद प्रो. राय ने मुझे बुलाया और कुछ सलाह दी। कहा–"देखो, तुम्हें कुलसचिव बुलाएँगे और कुछ प्रशासनिक दायित्व देंगे। ध्यान रखना, उस दायित्व में आर्थिक पक्ष कहीं नहीं जुड़ा होना चाहिए। दूसरी बात, जीवन में कभी अधिकारी होने का बोध न आए, सिर्फ यह बोध रहे कि तुम एक शिक्षक हो। इसलिए यह भी स्पष्ट कर देना कि किसी भी दायित्व का निर्वाह तुम अपने वर्ग के बाद करोगे।" मैंने पुनः हामी में सिर हिलाया। कुलपति के साक्षात्कार के बाद जब मुझे दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का प्रशासनिक पदाधिकारी बनाया जा रहा था, तब मैंने कुलसचिव से कहा कि "मुझे कोई पद नहीं दिया जाए। मैं बिना पद के भी पूरी निष्ठा के साथ सहयोग करूँगा।" परंतु कुलसचिव का कहना था कि "पद के साथ उत्तरदायित्व जुड़ा होता है, जिसके बारे में हम अधिकार से पूछ सकते हैं और तुम्हें भी आवश्यक निर्णय लेने में दिक्कत नहीं होगी।" उन्होंने कहा कि "जिस विभाग का दायित्व तुम्हें दिया जा रहा है, वहाँ के निदेशक प्रो. सतीश कुमार राय हैं। तुम्हें कोई दिक्कत नहीं होगी। पूरे विश्वविद्यालय में उनसे अधिक अनुभवी शायद ही कोई हो। वैसे भी यह उनकी ही इच्छा है।" रात में नोटिफिकेशन से मालूम हुआ कि मुझे दूरस्थ शिक्षा निदेशालय का प्रशासनिक पदाधिकारी बनाया गया है। नोटिफिकेशन निकलते ही विश्वविद्यालय का माहौल बदल गया। बदले हुए माहौल को देखते ही प्रो. राय का फोन आया कि मैं दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के कार्यालय जाकर उक्त पद पर योगदान न दूँ। मैं असमंजस में पड़ गया–कुलपति और कुलसचिव के आदेश को मानूँ या प्रो. राय की सलाह? फिर मुझे कुलसचिव की बात याद आई कि "इस पूरे विश्वविद्यालय में प्रशासनिक

अनुभव शायद ही प्रो. राय से अधिक किसी के पास हो।" स्वाभाविक रूप से मैंने प्रो. राय का सुझाव स्वीकार किया।

अगले दिन से मुझे धमकियाँ मिलनी शुरू हुईं। परोक्ष या अपरोक्ष रूप से कई तरह के दबाव मुझ पर डाले जाने लगे। मैंने अनुभव किया कि इस स्थिति में मेरे आगे कोई पूरी मजबूती के साथ खड़ा है, तो वे हैं प्रो. राय। इसी दौरान भारत सरकार की एक परियोजना के लिए देश के कुछ चयनित शिक्षकों को प्रशिक्षण देना था, जिसमें मेरा नाम आ गया, फलत: मैं चंडीगढ़ जाने लगा। प्रो. राय ने मुझे बुलाया और कहा—"देखो, यह सब चलता रहेगा। तुम बच्चों के हित में दिल्ली जाकर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय को पुन: शुरू कराने के लिए अधिकारियों से बात करो।" चूँकि मैं यूजीसी और डेक दोनों से सहज था, वहाँ मेरे कई मित्र थे, मैंने हामी भर दी। रास्ते में कई बार प्रो. राय का फोन आया—'तुम वहाँ पहुँचो, मैं डाक्यूमेंट्स स्कैन करवाकर भेजता हूँ।' कभी फोन पर ही ब्रीफ करते। मुझे समझ में आ चुका था कि वे किसी भी कीमत पर दूरस्थ शिक्षा निदेशालय को सुचारु-सुव्यवस्थित करवाना चाहते हैं। इस संदर्भ में मेरी बात डेक के पूर्व उप-निदेशक से हो ही रही थी कि मेरे पास एक अखबार की कटिंग आई, जिसमें लिखा हुआ था कि दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय के प्रशासनिक पदाधिकारी पद को स्थगित किया जाता है। अब मैं अधिकृत ही नहीं था उनसे इस संदर्भ में बात करने के लिए। मीटिंग बीच में ही स्थगित कर मुझे निकलना पड़ा। मीटिंग छोड़ते समय पूर्व उप-निदेशक डॉ. शेखर सुमन ने सलाह दी कि यदि अपने विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा केंद्र को मान्यता दिलवानी हो तो नैक के मूल्यांकन के मानदंडों पर काम करवाना शुरू कीजिए; साथ ही वहाँ यह देखिए कि जो पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं, उनकी अध्ययन सामग्री का स्वरूप और स्तर कैसा है।

सप्ताह-भर बाद जब मैं वापस आया तो मैंने सारी बात सर को बताई। जानने की कोशिश भी की कि संस्था में काम किस रूप में किया गया है। जानकारी एकत्रित करते हुए मुझे पता चला कि वहाँ की एस.एल.एम. (सेल्फ लर्निंग मेटेरियल) तैयार करने में भी प्रो. राय की मुख्य भूमिका रही है। उन्होंने कई इकाइयों का लेखन किया तथा कई प्रश्नपत्रों का संपादन भी किया। एक तरह से कहूँ तो स्नातक और स्नातकोत्तर के साथ एम.फिल. हिंदी के पाठ्यक्रम से लेकर अध्ययन सामग्री तक के निर्माण में उन्होंने

महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। जहाँ तक निदेशालय के निदेशक की भूमिका का प्रश्न है, उनको उस समय संस्था की कमान सौंपी गई जब संस्था नियम और नीतियों के स्तर पर कई समस्याओं का सामना कर रही थी। वे जब निदेशक नियुक्त किए गए, उसके कुछ ही दिनों बाद पूर्व-लंबित केस के कारण उन्हें न्यायालय में उपस्थित होना पड़ा। हालाँकि नाराज न्यायाधीश को प्रो. राय से बात करते ही भरोसा हो गया कि शायद निदेशालय की सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। प्रो. राय ने हर स्तर पर कोशिश की भी। सफलता मिलना और नहीं मिलना कई बाहरी कारणों पर भी निर्भर करता है, जिसका उल्लेख यहाँ आवश्यक नहीं जान पड़ता है। एक बात बताना चाहूँगा कि प्रायः प्रशासक जहाँ जवाबदेही अधिक हो जाने पर प्रश्नों और प्रश्नकर्ताओं से बचते फिरते हैं, वहाँ प्रो. राय की यह सबसे बड़ी खासियत मैंने देखी कि उन्होंने उन प्रश्नों से बचने की कभी कोशिश नहीं की, बल्कि अपने व्यस्ततम समय में से उन विद्यार्थियों के लिए वे समय निकालते, उनकी समस्याओं को सुनते और उन समस्याओं के संदर्भ में उचित व्यक्ति से बात भी करते। कभी झल्लाते नहीं, बल्कि अपराधबोध में रहते कि व्यवस्था में बँधे होने के कारण वे उन विद्यार्थियों के लिए कुछ कर नहीं पा रहे हैं। अक्सर कहते कि संस्था के महत्त्वपूर्ण दायित्ववाले पद पर होने के बावजूद यदि मैं विद्यार्थियों और कर्मचारियों के हित की रक्षा नहीं कर सकता तो मुझे इस पद पर बने रहना अच्छा नहीं लगता। शायद मन पर इतना दबाव था कि उन्होंने बाईस माह के कार्यकाल के बाद 9 सितंबर, 2020 को निदेशक के पद से इस्तीफा दे दिया।

प्रशासक के रूप में प्रो. राय की एक बड़ी विशेषता है कि वे पदग्रहण करते ही पूरे कार्यकाल की रूपरेखा तैयार कर लेते हैं। 1 फरवरी, 2020 को उन्होंने विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के विभागाध्यक्ष का पद ग्रहण किया और मात्र दो दिनों के बाद 3 फरवरी, 2020 को विभागीय परिषद् की बैठक की और अपना विजन स्पष्ट किया और बड़े ही लोकतांत्रिक तरीके से सभी कर्मचारियों और प्राध्यापकों को योग्यतानुसार दायित्व सौंप दिया।

मैं कार्यालय प्रभारी बना। आरंभ में मैं छात्रों की सहूलियत से अधिक विश्वविद्यालय के नियमों को देखता। वे मुझे बुलाते और कहते–विश्वविद्यालय के सारे नियम विद्यार्थियों के विकास के लिए बनाए गए हैं। यदि कोई नियम उनके विकास में बाधक हो तो उसे थोड़ा लचीला

कर दो। यदि दिक्कत हो, मुझे बताओ। मैं विश्वविद्यालय प्रशासन से बात कर लूँगा। उनका एक प्रमुख सिद्धांत है कि विद्यार्थी हैं तो हम हैं। फिर भी मैं कभी-कभी नियमों की बात करता तो एक ही बात कहते–

बहुत करेगी कजा आके घर बदल देगी
यहाँ नहीं तो वहाँ ही रहा करेंगे हम।

संभवत: इन्हीं भयों को त्याग देने से प्रो. राय छात्रहित में निर्णय लेने से हिचकते नहीं हैं। हालाँकि इसका अर्थ यह कतई नहीं कि वे छात्रों के प्रति इतने उदार हैं कि वे छात्रों की अनुशासनहीनता को बर्दाश्त करें। वे अनुशासनहीन होने पर किसी भी विद्यार्थी को नहीं छोड़ते, भले ही वह उनका अपना करीबी ही क्यों न हो। उन्होंने अपनी सलहज को भी सत्रांत परीक्षा में स्पेल्ड कर दिया था। यह बात तय है कि वे यदि उदार हैं, तो सभी विद्यार्थियों के लिए और कठोर हैं, तो भी सभी विद्यार्थियों के लिए। वे विद्यार्थियों में भेद नहीं करते। इसका बड़ा अनुभव मैंने परीक्षा के दौरान किया। कई परीक्षाओं में प्रो. राय केंद्राधीक्षक रहे हैं और मैं सह-केंद्राध ीक्षक। बहुत से लोग किसी की पैरवी लेकर आते तो बहुत से किसी का रेफरेंस। बाधाएँ बहुत हैं यहाँ परीक्षा को कदाचार-मुक्त कराने में। प्रो. राय से कोई बात करता या दबाव डालता तो एक ही बात कहते–"यदि मुझे छूट देनी पड़ी तो सबको दूँगा, नहीं तो किसी को नहीं। यदि आप किसी के पैरवीकार हैं तो मैं शेष विद्यार्थियों का पैरवीकार हूँ।" शायद यही कारण है कि विश्वविद्यालय प्रशासन उन्हें बार-बार यह दायित्व देना चाहता है।

प्रो. राय की प्रशासनिक सफलता का एक बड़ा कारण उनकी प्रबंध-क्षमता है। वे अपने समय और अपने अधीनस्थों का प्रबंधन बड़ी कुशलता के साथ करते हैं। उनकी यह प्रबंध-शैली ही है, जिसके कारण वे एक साथ कई पदों, जैसे कुलानुशासक, छात्र-कल्याण के अध्यक्ष तथा परीक्षा-नियंत्रक के दायित्व का निर्वाह ससमय सफलतापूर्वक कर चुके हैं। आज भी विभागाध्यक्ष और प्राक्-प्रशिक्षण केंद्र, मुजफ्फरपुर के निदेशक के साथ कई अन्य दायित्वों का निर्वाह कर रहे हैं। इन दायित्वों के निर्वाह-क्रम में अपना मूल शिक्षक-धर्म वे कभी नहीं भूलते। पहले वर्ग और विद्यार्थी, फिर शेष काम।

प्रो. राय की सबसे बड़ी खासियत यह है कि वे कोई प्रतिज्ञा कर लेते हैं, तो उसे पूरा करके ही रहते हैं। दिनकर की प्रतिमा की स्थापना हो या विभागीय पत्रिका का प्रकाशन। उनकी प्रतिज्ञा को पूरा करने में कोई सहयोग दे या न दे, वे न तो झुकते हैं और न याचना करते हैं। हालाँकि उन्होंने जो गुडविल कमाया है, वह काफी है उनकी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए।

घरों पे नाम थे नामों के साथ ओहदे थे
बहुत तलाश किया कोई आदमी न मिला।

आज के दौर में, जहाँ हर आदमी अपने ओहदे का गर्व करता है, प्रो. राय पहले ऐसे व्यक्ति मिले जो ओहदेदार से अधिक आदमी बने रहना चाहते हैं। उनके साथ काम करते हुए यह समझ बनी कि एक अच्छा प्रशासक (विशेषकर विश्वविद्यालय प्रशासन का) बनने के लिए पहले एक संवेदनशील आदमी होने के साथ एक ईमानदार शिक्षक होना आवश्यक है।

–सहायक प्राध्यापक,
विश्वविद्यालय हिंदी विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर।

ଓଡ଼ିଶା ରାଜ୍ୟ ମୁକ୍ତ ବିଶ୍ୱବିଦ୍ୟାଳୟ, ସମ୍ବଲପୁର
Odisha State Open University (OSOU)
Sambalpur

Letter No. 3335/OSOU/2022

Date: 30.11.2022

To,
Dr Sandhya Pandey
Assistant professor
B.R.A University, Bihar
Muzaffarpur, Phn- 9454066675
E-Mail: sandhyapdy599@gmail.com

Sub: Preparation of Self Learning Material, Programme BAHD (1st Semester)

Dear Sir/Madam,

With reference to the captioned subject, we are pleased to inform you that, you have been approved as a Course writer by the University. You are requested to write the following units for our Bachelor of Arts in HINDI (BAHD) programme.

COURSE CODE: BAHD CC-1 हिन्दी साहित्य का इतिहास भाग -1

BLOCK – 04 सगुण काव्य

UNIT -13 सगुण काव्य धारा की प्रवृतियाँ

UNIT-14 रामभक्ति शाखा ,प्रमुख कवि और रचनाएँ

UNIT – 15 कृष्ण भक्ति शाखा

UNIT -16 कृष्णभक्ति शाखा के कवि प्रमुख कवि और रचनाएँ

Please note that, each unit shall preferably consist of around 5000 words. The manuscript should comply with the 'UGC **(Promotion of Academic Integrity and Prevention of Plagiarism in Higher Educational Institutions) Regulations, 2018'**.

A sample format and unit structure is enclosed herewith for your reference.

You are requested to complete the assignment before **10th December 2022**.

You will be paid a token honorarium as fixed by the University from time to time for writing the Course material.

Enclosures

i) Detailed syllabus of BAHD ii) Sample copy of a Self-Learning Material iii) Remuneration Bill format

Yours Sincerely

30/11/22

Registrar, OSOU
Registrar
Odisha State Open University
Sambalpur

Copy to VC for kind Information
Copy to Accounts for necessary action